उच्च शिक्षा को लगे अमेरिकी पंख

गिरिराज अग्रवाल

साझा विश्वविद्यालय नेटवर्क के तहत अमेरिका के नामी विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर भारत आएंगे और उनके व्याख्यान डिजिटल तकनीक से देश के बहुत-से विश्वविद्यालयों के छात्रों तक पहुंचाए जाएंगे।

आप क्या उच्च शिक्षा हासिल कर रहे उन हजारों भारतीय छात्रों में शामिल हैं जो अमेरिका के नामी प्रोफेसरों से पढ़ने की अपनी हसरत इसलिए पूरी नहीं कर पाए कि अमेरिका के नामी विश्वविद्यालयों में दाखिला नहीं ले सके? ऐसे भारतीय छात्रों के लिए अब नए दरवाजे खुल रहे हैं। वे भारतीय विश्वविद्यालयों में पढ़ाई करते हुए भी अमेरिकी शिक्षा विशेषज्ञों के ज्ञान और अनुभव से रूबरू हो सकते हैं। दिसंबर 2005 में भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा शुरू किए गए भारत-अमेरिका विश्वविद्यालय नेटवर्क के तहत ई-लर्निंग परियोजना में अमेरिका के नामी विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों को भारत आमंत्रित कर उनके विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में व्याख्यान आयोजित करने और अनुसंधान कार्य में भागीदारी तलाशने का सिलसिला शुरू हुआ है। इस पहल में मुख्य भूमिका निभा रहे कोयंबटूर स्थित अमृता विश्वविद्यालय के कुलपति वेंकट रंगन के अनुसार, ''ये व्याख्यान भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के उपग्रह एडुसैट के जरिये भारत के बहुत-से अन्य विश्वविद्यालयों के छात्रों तक भी पहुंचाए जा रहे हैं।''

अमृता विश्वविद्यालय के अनुसार फिलहाल इस पहल में अमेरिका के 21 विश्वविद्यालय शामिल हो चुके हैं और भारत में कई भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों समेत 37 संस्थान शुरुआत में ही इस परियोजना से जुड़ चुके हैं। संस्थान का दावा है कि इसरो ने अगले कुछ महीनों में 50 विश्वविद्यालयों में यह सुविधा उपलब्ध कराने का वादा किया है। इस पहल में तीन अमेरिकी कंपनियां माइक्रोसॉफ्ट, क्वालकॉम और कैंडेंस भी शामिल हैं। अमृता विश्वविद्यालय का कहना है कि इस पहल से संबद्ध अमेरिकी विश्वविद्यालय अपने शिक्षकों को भारत आने और वहां की पाठ्य सामग्री इस्तेमाल करने की रजामंदी देंगे। उनके खर्चे की जिम्मेदारी नेटवर्क से जुड़ी तीनों कंपनियां, अमृता विश्वविद्यालय और भारत-अमेरिका विज्ञान-प्रौद्योगिकी मंच उठाएंगे। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सैन डिएगो के जैकब स्कूल में कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग के प्रोफेसर रह चुके रंगन का कहना है, ''सूचना प्रौद्योगिकी की मारामारी ने भारत के उच्च शिक्षा जगत में अच्छे अध्यापकों की किल्लत पैदा कर दी है। इस पहल से इस कमी की भरपाई हो सकेगी और भारत के दूसरे दर्जे के तकनीकी संस्थानों के छात्रों को भी दुनिया के बेहतरीन प्रोफेसरों से पढ़ने का मौका मिलेगा जिससे भारत के इंजीनियरों की गुणवत्ता में सुधार होगा। यह भारत में ई-लर्निंग को नई दिशा देगा।''

इस पहल में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन और भारत के विज्ञान-प्रौद्योगिकी विभाग के अलावा अमेरिकी और भारत सरकार का साझा संगठन भारत-अमेरिका विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंच भी शिरकत कर रहा है। मंच के कार्यकारी निदेशक अरविंद मित्रा के अनुसार मंच इस नेटवर्क से जुड़ी गतिविधियों में समय-समय पर मदद करेगा। वह बताते हैं, ''इसरो ने जहां उपग्रह-प्रसारण के लिए अपने विशेष शैक्षिक उपग्रह एडुसैट की सेवाएं दी हैं, वहीं विज्ञान-प्रौद्योगिकी विभाग की प्रौद्योगिकी पूर्वानुमान और आकलन परिषद 'टिफाक' इस नेटवर्क के लिए मूल पाठ्य सामग्री तैयार करने में सहायता कर रही है। अमृता विश्वविद्यालय समन्वयन का जिम्मा निभा रहा है।''

डॉ. रंगन के अनुसार इस पहल का महत्व देखते हुए अमृता विश्वविद्यालय ने अपने कोयंबटूर परिसर में भारत-अमेरिका उच्च शिक्षा और अनुसंधान केंद्र की स्थापना की है। उनके अनुसार, ''इस साल के पहले तीन महीनों में एक दर्जन अमेरिकी विशेषज्ञ इस नेटवर्क के तहत भारत आए

साभार: अमृता विश्वविद्यालय

ऊपर: कोयंबटूर स्थित अमृता विश्वविद्यालय। बाएं: भारतीय और अमेरिकी विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ।

पहल में भागीदार प्रमुख भारतीय संस्थान

आईआईटी मुंबई, आईआईटी कानपुर, आईआईटी चेन्नई, मौलाना आजाद नेशनल इंस्टीट्यूट, भोपाल, बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, रांची, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, सिल्चर, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूर, अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई, दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, दिल्ली, कोटा इंजीनियरिंग कॉलेज, कोटा, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कुरुक्षेत्र, इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, निरमा विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज, त्रिशूर।

हैं और उन्होंने भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों के अध्यापकों और छात्रों को संबोधित किया है। इन विशेषज्ञों के व्याख्यान की डिजिटल रिकॉर्डिंग की जा रही है और उन्हें अमृता विश्वविद्यालय के डिजिटल पुस्तकालय का हिस्सा बना दिया जाएगा जिससे कि कोई भी छात्र इस सामग्री को जब चाहे अपने हिसाब से इस्तेमाल कर सके।''

इस नेटवर्क के बारे में टेक्सास विश्वविद्यालय में प्रोफेसर विजय कुमार गर्ग कहते हैं, ''इससे भारतीय विश्वविद्यालयों को अमेरिकी प्रोफेसरों की विशेषज्ञता का लाभ मिलेगा जबकि अमेरिकी विश्वविद्यालय उच्च अध्ययन के लिए भारतीय प्रतिभाओं को आकर्षित करने में सफल हो सकेंगे। इससे अनुसंधान के क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ेगा।'' वह बताते हैं कि टेक्सास विश्वविद्यालय में बहुत-से भारतीय छात्र हैं और विश्वविद्यालय पूरी दुनिया के बेहतरीन छात्रों को अपने यहां लाना चाहता है। गर्ग के अनुसार, ''हमने इस प्रोग्राम का व्यापक प्रचार किया है और मैंने खुद संकाय सदस्यों से इस बारे में संपर्क किया है। हमारा इरादा अध्यापकों के साथ ही छात्रों के आदान-प्रदान का भी है।'' कुछ इसी तरह की राय हार्वार्ड विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग विभाग के डीन वेंकी नारायणमूर्ति की है। वह कहते हैं, ''भारत में ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचने और अमेरिकी साथियों की विशेषज्ञता का लाभ उठाने का यह बहुत उपयोगी जरिया है जिनके पास समय कम होता है।''

कई अमेरिकी प्रोफेसर मानते हैं कि नई वैश्विक चुनौतियों से निपटने में इस तरह के नेटवर्क अहम जिम्मेदारी निभा सकते हैं और भारतीय युवा प्रतिभाओं का उपयोग किया जा सकता है। इस नेटवर्क के शुरू होने पर भारत आने वाले यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सैन डिएगो के प्रोफेसर राजेश गुप्ता भी उन्हीं में हैं। वह कहते हैं, ''इस तरह के नेटवर्क से सबसे बड़ा फायदा यह है कि हम आने वाली पीढ़ियों के लिहाज से समाज के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए प्रतिभाओं को तराश पाएंगे। मौजूदा दौर में इंजीनियरी की नई परिभाषा गढ़ी जा रही है। सैन डिएगो में हमने बहु अंतर-विषय केंद्र बनाए हैं। इस क्रम में हमने पाया है कि ऑटोमोटिव, सूचना प्रौद्योगिकी और जैव-चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में विचारों के आदान-प्रदान की बहुत गुंजाइश है। यह नेटवर्क इस तरह के प्रयास की शुरूआत है।''

इस पहल में शामिल पर्डू विश्विविद्यालय के रसायन इंजीनियरी के विशिष्ट प्रोफेसर और एसोसिएट प्रमुख दोराईस्वामी रामकृष्ण कहते हैं कि यह पहल इस बात का बेहतरीन उदाहरण है कि भारत के विश्वविद्यालय दुनिया के सर्वश्रेष्ठ मानव संसाधनों का किस तरह लाभ उठा सकते हैं। वह कहते हैं, ''इससे अमेरिकी बुद्धिजीवियों को भी भारत के नामी संस्थानों के दायरे से बाहर छितरी भारतीय प्रतिभाओं से भी रूबरू होने का मौका मिलेगा। इस तरह के आदान-प्रदान से कुछ बढ़िया ही निकल कर आएगा।'' इलिनोइस विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ब्रूस वोजक कहते हैं, ''इससे अमेरिकी अध्यापकों को भारत में शोध भागीदारी के मौके तलाशने के अवसर मिलेंगे।''

पहल में शामिल अमेरिकी विश्वविद्यालय

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सैन डिएगो, कॉर्नेल, कार्नेगी मेलन, केस वेस्टर्न, स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क, बफैलो, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्केले, हार्वार्ड, प्रिंस्टन, मेसाच्युसेट्स, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, लॉस एंजिलीस, टेक्सास विश्वविद्यालय, आस्टिन, वाशिंगटन विश्वविद्यालय, इलिनोइस विश्वविद्यालय, विस्कांसिन-मैडिसन विश्वविद्यालय, जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ डैकोटा, मैरीलैंड विश्वविद्यालय, मिशिगन विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सांता क्रूज, पर्डू विश्वविद्यालय और येल विश्वविद्यालय।

अमेरिका-भारत नेटवर्क को वित्तीय मदद मुहैया कराने के पीछे कार्पोरेट जगत का क्या उद्देश्य है और वह किन लक्ष्यों को सामने लेकर चल रहा है? इस बारे में माइक्रोसॉफ्ट का कहना है कि वे अंतर्राष्ट्रीय ई-लर्निंग उत्कृष्ट केंद्र स्थापित करने में अमृता विश्वविद्यालय की मदद कर रहे हैं। इसीलिए कंपनी ने अमृता विश्वविद्यालय में 50 लाख रुपये की मदद देकर तीन साल के लिए माइक्रोसॉफ्ट चैयर स्थापित की है। कंपनी के कार्पोरेट वाइस प्रेसिडेंट एस. सोमासेगर के अनुसार, ''हम छात्रों, अध्यापकों ओर जीवनपर्यंत सीखने वालों को ज्यादा सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और इसके लिए हमारी दृष्टि दीर्घकालीन है।'' उधर क्वालकॉम का कहना है कि वह इस तरह के प्रयासों को भविष्य में भी मदद देगा। फिलहाल कंपनी यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सैन डिएगो और केलिफोर्निया दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (कैलिट2) के प्रोफेसरों के भारत आने पर उनकी हर तरह की जरूरत का ध्यान रखेगा। क्वॉलकॉम इंडिया के प्रेसिडेंट कंवलिंदर सिंह कहते हैं, ''हम उद्योग जगत और विश्वविद्यालयों के बीच संपर्क का महत्व जानते हैं। हम ऐसा करना जारी रखेंगे क्योंकि अगली पीढ़ी के प्रौद्योगिकी लीडर तैयार करना बहुत महत्वपूर्ण है।''

मित्रा कहते हैं कि ''विश्वविद्यालय भविष्य में सिर्फ अपने भौतिक परिसर तक सीमित नहीं रहेंगे, वे नए स्वरूप में सामने आएंगे। छात्र चाहे दुनिया के किसी भी कोने में हों, तीसरे दर्जे के शिक्षकों के व्याख्यान सुनने के बजाय बेहतरीन प्रोफेसरों के डिजिटल व्याख्यान सुनना ज्यादा पसंद करेंगे। भारत-अमेरिका विश्वविद्यालय नेटवर्क ठीक इसी चीज की शुरुआत है।'' □